Actual size Page 1 frunt_master.qxd 8/17/2022 11:10 PM Page 1

राष्ट्रीय साप्ताहिक
हुब्बुल वतने जुज़ऊम मिनल ईमान...
जन वकालत
वतन से मोहब्बत ईमान का हिस्सा है...
सम्पादक - राजेश झाला ए. रज़ाक
वर्ष - 10, अंक -42 गुरुवार, दिनांक- 18 अगस्त से 24 अगस्त 2022 कीमत 5 रु. पृष्ठ 4 www.janvakalatnews.com email:-janvakalat.rtm@gmail.com

शिक्षा बगैर प्रगति संभव नहीं विद्यार्थी अपनी पढ़ाई के प्रति समर्पित रहे- राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल

जनवकालत/रतलाम/सैलाना

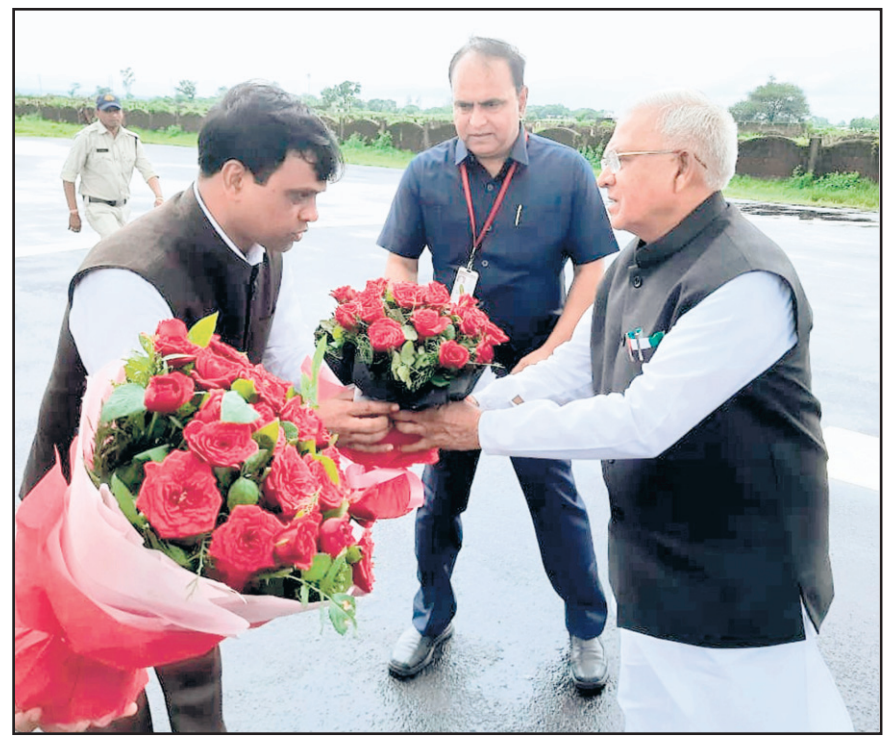

सभी विद्यार्थी अपनी शिक्षा के प्रति सदैव समर्पित रहे, जीवन में शिक्षा के बगैर प्रगति संभव नहीं है। नियमित रूप से लाइब्रेरी में अध्ययन करते रहे, ज्ञान अर्जन में कभी पीछे नहीं रहे। उक्त उद्गार प्रदेश के राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल ने जिले के सैलाना में शासकीय कन्या शिक्षा परिसर में अध्ययनरत बालिकाओं से चर्चा करते हुए व्यक्त किए। राज्यपाल ने इस दौरान शिक्षा परिसर में आयोजित की गई, आदिवासी सांस्कृतिक प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया। इस दौरान पूर्व विधायक संगीता चारेल, कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी, एसपी अभिषेक तिवारी आदि उपस्थित थे। शिक्षा परिसर में अध्ययनरत बालिकाओं से चर्चा करते हुए राज्यपाल ने बालिकाओं के सामान्य ज्ञान की जानकारी दी। उनसे वर्तमान राष्ट्रपति, राज्यपाल तथा जिले तथा जिले में ट्राइबल की जनसंख्या के बारे में पूछा प्रदेश में अजा-जजा जनसंख्या की जानकारी दी। राज्यपाल श्री पटेल ने बालिकाओं से उनके भावी कैरियर के बारे में भी चर्चा की जानना चाहा कि वे आगे चलकर क्या बनना चाहेंगे। प्रतिभा को विकसित करने और जीवन में विकास के लिए राज्यपाल ने कठिन मेहनत तथा अध्ययन करते हुए अपनी राह प्रशस्त करने की प्रेरणा दी। राज्यपाल श्री पटेल ने बालिकाओं से उनकी नियमित दिनचर्या के बारे में भी जाना। श्री पटेल ने बालिकाओं से कहा कि वह प्रातः जल्दी उठकर प्रार्थना करें, समय पर भोजन-नाश्ता करे। पढ़ाई के लिए अपना समयबद्ध कार्यक्रम बनाएं। राज्यपाल ने बालिकाओं से कहा कि वे अपने माता-पिता का जीवन में सदैव ध्यान रखें। माता-पिता अत्यंत कठिनाइयों को झेलकर उन्हें आगे बढ़ाते हैं, भाई और बहन दोनों ही अपने माता-पिता का सदैव ध्यान रखें।

राज्यपाल श्री पटेल ने बालिकाओं से मातृभूमि और अपने देश की सेवा में सदैव समर्पित रहने अनुशासित जीवन रखने तथा देश के क्रांतिकारियों और वीरांगनाओं के बारे में सदैव अध्ययन करने की बात कही। राज्यपाल ने कहा कि क्रांतिकारियों वीरांगनाओं के बलिदान से ही देश को स्वतंत्रता मिली है। इस दौरान राज्यपाल श्री पटेल ने निर्देशित किया कि शिक्षा परिसर में अध्ययनरत बालिकाओं के अच्छे स्वास्थ्य के लिए नियमित उपचार कैंप लगाते रहे। खासतौर पर सिकलसेल की बीमारी की जांच करवाने के लिए निर्देशित किया। इस दौरान राज्यपाल श्री पटेल द्वारा बालिकाओं को चॉकलेट वितरित की गई। बालिकाओं द्वारा राज्यपाल को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री आशीष दशोत्तर ने किया।

जनजाति संस्कृति से संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन-

राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल ने शासकीय कन्या शिक्षा परिसर में आयोजित स्थानीय जनजातीय समाज की संस्कृति से संबंधित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। इस प्रदर्शनी में रतलाम जिले के जनजातीय समाज द्वारा उपयोग में लाए जाने वाले आभूषण, वेशभूषा, वस्त्र, कृषि औजार, खानपान संबंधी अनाज इत्यादि प्रदर्शित किए गए थे। प्रदर्शनी में विशेष रुप से जनजाति समाज द्वारा प्राचीनकाल से उपयोग में लाए जा रहे गोफन, तीर कमान, भाले जैसे हथियार, खानपान में उपयोग के अनाज जैसे मक्का ज्वार मसाले, उपचार के लिए इस्तेमाल की जाने वाली जड़ी-बूटियां, चांदी तथा अन्य धातुओं की ज्वेलरी इत्यादि प्रदर्शित किए गए थे।

राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल का बंजली हवाई पट्टी पर आत्मीय स्वागत अभिनंदन किया-

प्रदेश के राज्यपाल श्री मंगू भाई पटेल का रतलाम आगमन पर बंजली हवाई पट्टी पर आत्मीय स्वागत, अभिनंदन किया गया। हवाई पट्टी पर महापौर प्रहलाद पटेल, पूर्व विधायक संगीता चारेल, कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी, पुलिस उपमहानिरीक्षक सुशांत सक्सेना, पुलिस अधीक्षक अभिषेक तिवारी द्वारा पुष्पगुच्छ भेंट किए गए।

राष्ट्रीय साप्ताहिक
जन वकालत
दिनांक 18 अगस्त से 24 अगस्त 2022

चिकित्सा केंद्रो को आदर्श बनाया जाएगा
कायाकल्प अभियान को लेकर बैठक में विधायक डॉ.पांडेय ने कहा

जनवकालत

रतलाम। चिकित्सा सेवाओं को बेहतर बनाने के लिए प्रदेश सरकार कोई कसर नही छोड़ रही है। स्थानीय स्तर पर भी हमे आदर्श चिकित्सा केंद्र बनाने के प्रयास में जुटना चाहिए। उक्त बात विधायक डॉ. राजेंद्र पांडेय ने सिविल हॉस्पिटल में कायाकल्प अभियान के तहत मिशन सेहत के क्रियान्वयन को लेकर आयोजित बैठक में कही। बैठक में अनुविभागीय अधिकारी श्री हिमांशु प्रजापति, समाजसेवी श्री प्रदीप चौधरी, लायंस क्लब के चेयरमैन श्री अनिल काला, सिविल हॉस्पिटल प्रभारी डॉ. दीपक पालड़िया, पिपलोदा बीएमओ डॉ. योगेंद्र सिंह गामड़ सहित स्वास्थ्य केंद्रों के प्रभारी उपस्थित रहे।

बैठक में जानकारी दी गई कि कायाकल्प अभियान के तहत सभी चिकित्सालयों व चिकित्सा केंद्रों को बेहतर बनाया जाना है, जिसमे मरम्मत,व सुधार के कार्य किये जाना है जिसके लिए सामान्य व विशेष मरम्मत मद में राशि दी गई जिसके उपयोग हेतु पर्यवेक्षण समिति बनाई जाकर कार्ययोजना का क्रियान्वयन किया जाना है। बैठक में सिविल हॉस्पिटल जावरा में फर्श, शौचालय मरम्मत के अलावा रंगरोगन, नई ओपीडी में रंगरोगन, एनआरसी वार्डो में मरम्मत कार्य, बगीचो में जाली मरम्मत, परिसर में दिशा संकेतक लगाने व दोनों मुख्य द्वार निर्माण कार्य जैसे कार्यो के लिए कार्ययोजना बनाई गई, जिसका अनुमोदन किया गया।

विधायक डॉ. पांडेय ने इन सभी कार्यो को समय सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। इसी तरह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पिपलोदा में रेम्प निर्माण, फर्श व विभिन्न स्थानों पर मरम्मत कार्य, विद्युतीकरण कार्य और रंगरोगन कार्य कराए जाने के लिए कार्ययोजना बनाई गई। इसके अलावा पिपलोदा विकासखंड के चारों प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों पंचेवा, कालूखेड़ा, सुखेड़ा व मावता के लिए भी मरम्मत कार्यो को कार्ययोजना में सम्मिलित करने पर चर्चा हुई। जावरा विकासखंड के रिंगनोद व ढोढर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के लिए भी आगामी दिनों में कार्ययोजना बनाये जाने के भी निर्देश दिए गए।

बैठक से पहले विधायक डॉ पांडेय, अनुविभागीय अधिकारी श्री प्रजापति व अन्य सदस्यगणों ने सिविल हॉस्पिटल के विभिन्न वार्डो का निरीक्षण किया। बैठक में डॉ. फैजान उस्मानी, डॉ. दीपक शाह, डॉ. एकता पाटीदार सहित अन्य अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

सम्पादकीय

भारत की राजनीति में कई तरह के अजूबे होते रहते हैं कुर्सी और सत्ता के लिए कोई भी दल या नेता कुछ भी करने को तैयार रहता है। इसलिए सत्ता पलट के खेल के लिए आया राम गया राम मुहावरा पड़ गया था। पिछले दिनों महाराष्ट्र का घटनाक्रम सबने देखा हालांकि इस पर भाजपा की भी चूक रही क्योंकि जो शिवसेना उसकी सहयोगी पार्टी थी उसकी जिद उदारता दिखाकर मान ली गई होती तो उसी समय शिवसेना भाजपा की सरकार बन गई होती पर सत्ता के मोह ने धूर विरोधी पार्टी एनसीपी और कांग्रेस का शिवसेना के साथ गठबंधन बना दिया। यही पिछले दिनों बिहार में हुआ। जिन दलों की बुराई कर जदयू चुनाव में भाजपा के साथ गठबंधन कर 2019 में चुनाव जीता था। अब उन राजद तथा कांग्रेस और वामदल तथा हम पार्टी के बोल से महागठबंधन करते हुए नीतीश कुमार ने भाजपा का साथ छोड़कर नई सरकार बना ली है हालांकि इसमें भाजपा की भी कहीं ना कहीं कोई कमी दिखाई देती है जो कि वर्ष 2014 में भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए में 23 दल थे जो अब घटकर 16 रह गए हैं। वर्ष 2014 से 19 के बीच नए 11 दल भाजपा से जुड़े तो 14 दल भाजपा का साथ छोड़ गए। इसके अलावा भी 2019 के बाद 6 दल और साथ छोड़ गए। अब जदयू ने भी बिहार में साथ छोड़ दिया। हालांकि नीतीश कुमार की विश्वसनीयता कभी नहीं रही क्योंकि उन्होंने कई बार कई दलो को छोड़ा और कई दलों को अपनाया। भाजपा ने जदयू के विधायकों की कम संख्या होते हुए भी नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री बनाया पर जदयू और भाजपा में अनेक कारणों से अंदर ही अंदर खटपट चलती रही। भाजपा को भी आत्ममंथन करने का समय है तथा नीति बदल कर छोटे-छोटे सहयोगी क्षेत्रीय दलों को विश्वास में लेकर चलने का संकल्प करना पड़ेगा तभी वह सफल हो सकती है।

राजेश झाला 'ए. रज़ाक'

टीवी चैनल्स की अति उग्र बहसों को शालीन होने की जरूरत

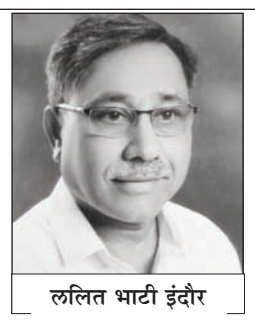
ललित भाटी इंदौर
जनवकालत/रतलाम

लेख के उक्त शीर्षक पर बात, टीवी समाचार चैनल्स पर प्रतिदिन संपन्न होने वाली राजनीतिक बहस में मुख्य रूप से भागीदारी करने वाले दो पक्षों, पहला- टीवी एंकर और दूसरा- देश के विभिन्न राजनीतिक दलों के चयनित राजनीतिक प्रवक्ताओं को लेकर की जा रही है। इसी क्रम में उक्त बहस को देखने वाले तीसरे पक्ष, टीवी दर्शकों का केवल इतना ही दोष माना जा सकता है कि अधिकांश दर्शक ऐसी नितांत बेकार की राजनीतिक बहस जिससे किसी का भी कोई भला नहीं होने वाला है, इस महाज्ञान को भली प्रकार समझने के बावजूद, सिर्फ अपना शेष फालतू समय व्यतीत करने के लिए ही देखते हैं। तो कुछ लोग अपने सायंकालीन राजनीतिक मनोरंजन के लिए। तो कतिपय, यह देखने के लिए कि किस राजनीतिक दल विशेष का सर्वज्ञानी प्रवक्ता, बहस के दौरान बोलने में, किसी भी मामले में कितने निम्न स्तर तक आ सकता है।

पिछले कुछ वर्षों से टीवी के लगभग ज्यादातर टीवी समाचार चैनल्स ने रोजाना राजनीतिक बहस कराने के कार्यक्रम को जरूरी सा बना दिया है। प्रतिदिन, शाम या रात होते ही टीवी समाचार चैनल्स पर परस्पर राजनीतिक संघर्ष कराने का सिलसिला शुरू हो जाता है। ऐसी अशालीन बहस किस स्तर तक जाती है, उसके लिए यह एक एकदम ताजा उदाहरण देख लेना ही पर्याप्त है, जबकि एक चलती बहस के दौरान एक युवा महिला टीवी एंकर द्वारा एक राजनीतिक दल के प्रदेश अध्यक्ष को जब डांट दिया गया, तो उन उम्रदराज राजनेता की प्रतिक्रिया थी ''आप मेरी टीचर नहीं हैं और ना ही मैं आपका स्टूडेंट। कृपया आप मुझसे तमीज से बात करें।''

ज्यादातर टीवी समाचार चैनल्स पर जब एक बहुत छोटी उम्र के एंकर के सामने देश के तीन या चार महत्वपूर्ण राजनीतिक दलों के प्रवक्ता सबसे पहले अपनी बात को जबरदस्ती बोलने, ज़्यादा से ज़्यादा कहने, विरोधी प्रवक्ता को किसी भी प्रकार से चुप कराने की अशालीन होड़ में लगे रहते हैं, तो यह स्थिति उस बहस को संपन्न करा रहे एंकर को 'सर्वज्ञ' घोषित कर देती है। ऐसी स्थिति में वह एंकर आगे रहकर आमंत्रित किए गए सम्मानित प्रवक्ताओं के साथ मनचाहा व्यवहार करने की स्वाधीनता पा लेता है। और वह ऐसा करता भी है।

आज एक या दो टीवी समाचार चैनल्स को छोड़कर बात की जाए, तो लगभग सभी टीवी समाचार चैनल्स पर उक्त प्रकार की राजनीतिक बहसों के दौरान, गला फाड़कर बोलने, अतिरिक्त रूप से चीखने-चिल्लाने, हाथ पटककर-मुक्का दिखाने, चेहरे पर गुस्से वाली बनावटी भाव भंगिमाएं बनाकर अपनी बात प्रस्तुत करने का प्रचलन-सा चल पड़ा है। लेकिन इस अराजक स्थिति के साथ, एक संतोष की बात यह है कि दो, तीन टीवी समाचार चैनल्स के एंकर की शालीनता इस मामले में जरूर राहत प्रदान करती है। लेकिन वह उस भीड़ में बहुत कम नजर आती है।

बहस के नाम पर रोजाना होने वाले उक्त किस्म के सायंकालीन दंगल में, देश के अनेक राजनीतिक दलों के प्रवक्ताओं को किसी मुद्दे विशेष पर बहस के नाम पर जिस प्रकार भिड़वाया जाता है, इससे प्रत्येक प्रवक्ता को उस दंगल में समस्त प्रकार के दांव अपनी इच्छानुसार लगाने की संपूर्ण छूट मिल जाती है।

सर्वप्रथम बात कर ली जाए, बहस के नाम पर सदैव खेले जाने एवं खिलाए जाने वाले राजनीतिक विवाद को लेकर। आरंभ में बहुत ही शालीनता से प्रस्तुत किया गया धीमा स्वर, कब आक्रामक रूप धारण कर लेगा, यह रहस्य उस तथाकथित बहस में हिस्सा ले रहे किसी भी व्यक्ति को मालूम नहीं रहता है। एकदम प्रभावित करने वाली शालीन शब्दावली, कब एकाएक अभद्र हो जाएगी, यह मामला भी गुप्त ही रहता है। जो प्रवक्ता बहस के दौरान, टीवी एंकर के बारम्बार रोकने के बावजूद भी अपना बोलना जारी रखता है, वह स्वतः ही विशेष प्रवक्ता होने का दर्जा प्राप्त कर लेता है। ऐसी बहस के दौरान,

'त्याग भावना' को भी भरपूर सम्मान मिलता है। अनेक प्रवक्ता, अपने शब्द संयम का त्याग कर भी बहस में सहभागिता करते हैं। कौन सा प्रवक्ता, उस बहस के दौरान, किस राजनीतिक दल के शीर्ष स्तर के राजनेता को लेकर, किस हद तक उसके सम्मान में, ओछी भाषा का कथन कर सकता है, यह भी उक्त टीवी बहस की एक अनिवार्यता हो गई है।

बहस करते समय परस्पर आप से तुम पर, इसके बाद के क्रम में तुम से तू पर आ जाना भी प्रवक्ताओं की एक अलग विशेषता होती है। और यह तू, कब झूमा-झटकी अथवा मारपीट में बदल जाएगा, इस अति गहरे ज्ञान से बहस करा रहा टीवी एंकर पूरी तरह से अनभिज्ञ ही रहता है। उसे तो कभी कभी यह ज्ञान प्राप्ति तब होती है, जबकि एक राजनीतिक दल का प्रवक्ता, क्रोधित होकर, दूसरे राजनीतिक दल के प्रवक्ता को अपनी जगह से उठकर पकड़ लेता है। उस पर घूंसों और मुक्कों की बारिश कर देता है। सामने ही ग्लास में पड़ा पानी, उस पर फेंक देता है। बात ज्यादा बढ़ने पर, सामने ही टेबल पर रखा, पेपरवेट उठाकर अन्य प्रवक्ता पर फेंक देता है। ऐसी विकट स्थिति के दौरान, उक्त लिखित दांव के अतिरिक्त, अन्य नाना प्रकार के नए नए दांव भी, समय देखकर उपयोग में ले लिए जाते हैं।

कभी कभी तो उस बहस कराने वाले एंकर की हालत इतनी नाजुक हो जाती है कि, बहस में एकदम तल्लीन प्रवक्ता, बहस छोड़कर, उसी पर शब्द प्रहार करके, उसको ही कटघरे में खड़े करने का प्रयास करते हैं। कुल मिलाकर लच्छेदार, मखमली, विनम्र, मारक, चुटीली, व्यंग्यात्मक, शालीन, अशालीन, अभद्र, अनीतिगत, असभ्य, अव्यावहारिक, अकुलीन, अपरिष्कृत, अशिष्ट, असुशील, संस्कारहीन, अक्खड़, अविनीत, बदलगाम, बेअदब, बदतमीज, कड़क, सिनाजोर, उज्जड, अशुभ, अकल्याणकारी, अमंगल, निरर्थक भाषा में ही वाणी प्रलाप करना, हमारे अधिकाधिक टीवी समाचार चैनल्स का एकमात्र अंतिम उद्देश्य रह गया है।

इति श्री।

जिले में अब तक करीब 770.5 मिलीमीटर वर्षा दर्ज

रतलाम। जिले में अब तक करीब 770.5 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई है। गत वर्ष इस अवधि तक औसत 605.83 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई थी। जिले में गत 24 घंटो के दौरान तक औसत 3.51 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई। आलोट में 4 मिलीमीटर, जावरा में 5 , ताल में 3, पिपलौदा में 7, बाजना में 1 मिलीमीटर, रतलाम में 4 मिलीमीटर, रावटी में 2.10 मिलीमीटर तथा सैलाना में 2 मिलीमीटर वर्षा दर्ज की गई। उल्लेखनीय है कि रतलाम जिले की सामान्य वर्षा 918.3 मिलीमीटर है।

शिक्षा जगत की अजब कहानी

डॉ. आर.पी. चतुर्वेदी

गतांक से आगे.... अपने स्कूल में बड़ी-बड़ी सुविधाएं होने का दावा करते हैं पर अधिकांश स्कूलों ने तो विधिवत मान्यता भी नहीं ली है और विन्टर गार्डन तथा नर्सरी से केजी वन-टू आदि कक्षाएं चलाने और सुविधाएं देने का दावा कर रहें है जबकि छोटे बच्चों से किस प्रकार व्यवहार करना है उन्हें मनोवैज्ञानिक ढंग से टेकल करना प्रेम से समझाना आदि की टेकनीक का ज्ञान ही शिक्षकों को नहीं है अर्थात् अप्रशिक्षित शिक्षकों को कम वेतन पर कई संस्थाओं में रखा गया है। पालकों से भारी भरकम फीस वसूल की जा रही है जिसकी तुलना में सुविधाएं या मार्गदर्शन तथा अध्यापन अभाव है। हालत यह है कि कक्षा 6 में पढ़ने वाले अनेक विद्यार्थी ठींक ढंग से हिंदी, अंग्रेजी पढ़ नहीं पाते और गणित के सरल सवाल तक हल नहीं कर पाते। इससे लगता है कि अधिकांश संस्थाएं केवल धन कमाने का उद्देश्य बनाए हुए है।

कोई विद्यार्थी स्कूल में अचानक बीमार हो जाता है या किसी को अज्ञात कारणवश पेट दर्द या सर दर्द हो जाए या चक्कर आ जए तो झट से स्कूल वाले पालकों को फोन कर देते हैं कि आपके बच्चों को ले जाओ, स्कूल में बच्चे को एक तरफ या बरामदे में बिठा दिया जाता है। भारी-भरकम फीस लेने वाले स्कूलों के प्रबंधन को नैतिकता के तकाजे के नाते तथा मानवीयता के नाते भी बच्चे को प्राथमिक उपचार देकर उसे दिलासा देकर हिम्मत दिलाना चाहिए । ना कि कक्षा से उपेक्षित कर बाहर बिठा देना चाहिए। किसी के पालक या माता-पिता स्कूल पहुंचने की स्थिति में ना हो तो क्या हो...? यही हाल आधार कार्ड के मामले में भी है। अक्सर शहर में आधार कार्ड के केन्द्रों के सर्वर डाउन चल रहे हैं या आधार कार्ड बन नहीं रहे तो दूसरी और छोटे बच्चों नर्सरी के बच्चों से लगाकर बड़े बच्चों के आधार कार्ड जल्दी जमा करने का दबाव पालको पर डाला जा रहा है। समझ से परे है कि आधार कार्ड की छोटी कक्षाओं में इतनी तीव्र आवश्यकता क्यों कर हो रही है, इसका जवाब किसी के पास नहीं है।

क्रमशः

युग दृष्टा कबीर

जनवादी लेखक संघ जिला इकाई रतलाम द्वारा अलमस्त कबीर पर शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई विद्यालय में एक विस्तृत चर्चा का आयोजन किया गया। वक्तव्य पढते हुए प्रो. रतन चौहान ने कहा कि यह सच है कि कबीर तुलसी और उन कवि अनन्य भक्त थे किन्तु क्या यह केवल भक्त और भक्त ही थे उनके पास तिक्ष्ण दृष्टि भी संवेदनाओं का महासागर उनके भीतर ठाठे मारता था। विराट जनमानस से घुले मिले थे, अधिकांश समाज की तलछट का हिस्सा थे।

गानेवाला कबीर जोलाहा भारत देश में क्रांति दर्शी, कदम सृष्टा औरी सुधारक के रूप में ख्यात नहीं होता। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. रामकुमार शर्मा जैसे चिन्तक उसे अपने चिन्तन केन्द्र में ही रखते।

'कबीर युगदृष्टा थे अपने समय की सम्पूर्ण गतिविधियों पर उनकी नजर रहती थी। गांधी के समान कबीर भी अपने समय की जनता के एक मात्र प्रतिनिधि और पथ प्रदर्शक थे। महात्मा गांधी की माँ कबीर पंथी थी। गांधीजी पर उनकी शिक्षा का बहुत बडा प्रभाव पड़ा।

कबीर का जन्म संवत 1456 तुलसी का जन्म 1589 माना जाता है वह सिकंदर लोधी के शासन में लिख रहे थे और एक निर्मिक मूर्तिभजक की तरह इन पंक्तियों के माध्यम से खुली चुनौती दे रहे थे।

'मीया तुम्ह सौ बोल्यां बनि नही आवे।
हंस मसकीन सुदार्रबंदे तुम्हे राजस मनि आवे।

नीरु जुलाहा और मां द्वारा मुस्लिम परिवेश में पोषित कामसक्त तुलसी की तरह किसी अनिद्य सुंदरी (पत्नि रत्नावली) से प्रताडित उपदेशित हो न तो करघे से मुख मोड़ा न घर त्यागा। सूत कातते और कपडा बुनते हुए लोई के साथ गृहस्थ जीवन जिया।

कबीर और तुलसी के युगों में एक बड़ा अन्तर यह हैं कि सौ वर्ष की अवधि में मुस्लिम और हिन्दू जीवन प्रणालियाँ एवं चिंतन प्रणालिया एक दूसरे के निकट आ गई थी। सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक स्तरों पर उनमें एक गहरी पारस्परिक समझ विकसित हो गई थी। एक गंगा जमनी तहजीब विकसित हो गई थी। ईमाइमत की प्रेमधारा भी इसमें आ मिली थी और यह सब भारत भूमि पर घटित हो रहा था। युग का कटु विद्वेष तो उनकी (कबीर) सघन संवेदनाओं को आहत करता ही था तत्कालीन तंत्र की कटु सच्चाई भी उनकी आंखों से नहीं छुपी थी-

जोर किया तो जुलुम हैं लेई जवाब खुदाई सामंतो और सताधीशो पर वह अपने कबीराना अदांज में प्रहार करते थे उनका क्षोभ फूट पड़ता है।

उनके लिए डॉ. पारसनाथ तिवारी ने सोदाहरण विनम्रतापूर्वक स्पष्ट किया है कि कबीर के चिंतन में भारतीय और ईस्लामी चिंतन धाराओं की गहरी समझ तो हैं ही बौद्ध विचारों वज्रयानी सिद्धो और नाथों की विधार प्रणालियों का अदभुत समावेश हैं उनके विलक्षण व्यक्तित्व में औपनिषदिक, पौराणिक महाभारतयुगीन भक्ति प्रणालियों तथा पांच रात्र संहिता, शांडिल्य भक्ति सूत्र नारद भक्ति सूत्र और रामानुजाचार्य की भक्ति विवेचनाओं का अद्भुत सामंजस्य है।

कबीर पोथी ज्ञान में विश्वास नहीं करते थे उनका जो कुछ भी अर्जन था । वह उनके पर्यटन संतों फकिरों के सत्संग व जीवन में गहरी पैठ का सुफल था। तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश राजनैतिक दशाएं जन आस्था और जन परम्पराएं वह पुस्तक भी जिनको एक योगी की तरह उन्होंने जागती आंखों से पढा था-

'सुखिया सब संसार है खावे अरु सोवे।
दुखिया दास कबीर है जागे अरु रौवे।।

कबीर तुलसी सूर मीरा की तरह सगुणोपासक नहीं थे वे बाह्य से अंतर की यात्रा करते है और आन्तर्य से अनन्त विस्तार तक उनकी साधना का क्षेत्र फैल जाता है। यह उनकी अद्वितीय साधना और काव्य शक्ति का चमत्कार हैं कि वह अरुप को रुप और अकथ्य के कथ्य प्रदान कर देते है।

वे पौराणिक अवतारवाद का तो खण्डन करते ही है कर्मवाद और पुर्नजन्म का भी खण्डन करते हैं।

बहुरि हंम काहे को आवहिंग।
बिछुरे पंचतत की रचना तब हम रामहि पावहिगे।
कौन मरे कौन जनमे आई।
सरग तरक कोने टाति पाई।

कबीर गोरख पंथ का भी हठ योग से सुन्दरता से खण्डन करते है। कबीर के केन्द्र में जो धर्म हैं। तीर्थ हैं कलीसा हैं काबा हैं कोई ईश्वरीय शक्ति या खुदाई ताकत है वह सब मन में हैं, चित्तवृतियों में है विस्तार और विषय से मुक्त चितवृत्तियों ही अनंत सुख के वातायन खोलती हैं और दैहिक दैविक भौतिक ताप से युक्त करती हैं। मिथ्याभिमान और दंभ को पराजित करती है और समरसता के सिद्धांत को पुष्ट करती हैं कबीर लिखते है-

क्या जप क्या तप क्या व्रत पूजा
जाके रिदै भाव हैं दूजा।।
रे जन मन माधव स्यॉ लाइये।
चतुराई व चतुर्भुज पाइये।।
पंडित मुल्ला जो लिखि दिया।
छाडि चले हम कछु ना लिया।

कबीर कहते है-

आत्मा और ब्रह्म तथा मनुष्य मनुष्य के बीच पड़ा आवरण बिना ज्ञान की किरणों और उचित मार्गदर्शन के नहीं हट सकता ज्ञान की ज्योति गुरु के व्यक्तित्व से विकीर्ण होती है। इसीलिए कबीर सद्गुरु की इतनी वंदना करते है।

सतगुरु की महिमा अनंत,
अनंत किया उपगार
लोचन अनंत उघारिया,
अनंत दिखावन हार।

बहुआयामी के व्यक्तित्व के धनी कबीर भक्त हैं साधक हैं क्रांतिकारी सुधारक है. काशी का जुलाहा है किन्तु साहित्य के इतिहास में सर्वप्रथम एक कवि हैं जो समय की चुनौतियों को स्वीकार करता है। केवल आत्म मुक्ति उसका लक्ष्य नहीं । उसका स्वप्न है। विराट जनमानस की मुक्ति । वह बहिर्जगत से अन्तर्जगत और अन्तर्जगत से बहिर्जगत की यात्रा करता है। उसके पद साखी मेनी जिस सीमा तक उसके स्व को संबोधित है उतनी ही सीमा तक जगत को भी । काशी का जुलाहा अपने करने पर जिंदगी का सुख काटता है और अपने उच्च आदर्शों के अनुकूल संस्कृति का पट बनता है। उसकी कविता का ताना-बाना जन समुदाय के सुख और दुख बुनते है। उसकी भाषा, मुहावरे, उपमाएं, रुपक लय, गति, जन परंपराओं जन स्मृतियों एवं जन संघर्षो से उपजे है। कबीर की कविता जन-प्रवाह की तरह गळगडाती हुई बहती है। और अनगढ़ भाषा उसके पथ का निर्माण करती चलती है। उसका सौन्दर्य अनगढ़ है। तुलसी की कलात्मकता सूर के पदों का लालित्य और पीर, मीरा के मर्म का वेदना और विहलता के कम ही दर्शन होते हैं और संभवतः उसका कारण यह है कि उनका सीधा संबंध जनता है।

कबीर एक बरजने- फटकारने वाला कवि है। इसके विपरीत उनके व्यक्तित्व में एक आयाम ओर जोड़ देता है । कवह भक्ति आंदोलन का प्रथम पंक्ति का रचनाकार है। निर्गुण धारा का यह ज्ञानमार्गी कवि इनती मार्मिक भावाभिव्यक्तियां अपने कंठ से प्रस्फुटित कर सका क्योंकि उसका मन एक अक्षुण्ण रसधारा में भीगा हुआ था। प्रेमी ही नहीं जब वह आलोक के सूत्रधार और पथ प्रदर्शक के रूप में उदभुत होता है। तब भी उसकी वाणी कलात्मक और काव्यात्मक होती है-

ज्यू नैनू में पूतली, त्यूँ
खालिक घट मांहि।
मूरख लोग न जाएही बाहर
ढूँढण जांहि॥

भाषा का अनंत स्त्रोत जनता और उसके गतिशील जीवन में छुपा है और यहीं काव्य / कथ्य कालजयी होता है जहाँ कवि सीधा जन से सीधा संवाद करता है। कबीर ने इसे प्रमाणित कर दिया हैं। उनकी अनगढ वाणी में अदभुत ओज है। रामचन्द्र शुक्ल हिंदी साहित्य का इतिहास में कहते है-

सहज धर्म या समदृष्टि का उद्घोतक कबीर आज लगभग छ% सौ वर्षो के दीर्घ अंतराल के पश्चात भी भारतीय समाज में उतना ही प्रासंगिक है। उतना ही जितना उचड़े हुए सांस्कृतिक ताने बाने वाले अपने सामंती युग में था। हिंदू कहे राम हमरो तुरक रहिमाना / दोउ लरै मरे मरम्म न कोई जाना। आज भी वही स्थिति है। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ एडवोकेट शान्तिलाल जी मालवीय ने की तथा वरिष्ठ साहित्यकार रमेश शर्मा ने सफल संचालन किया तथा आभार जलेस सचिव श्री रणजीत सिंह राठौर ने माना। इस अवसर पर नगर के सुधी श्रोताओं ने भी अपने-अपने प्रश्न प्रो. रतन चौहान से किये। जिसका श्री चौहान द्वारा उत्तर दिया गया।

इति श्री।
रणजीत सिंह राठौर
जलेस सचिव
मो.नं. 9685150301

इस्लाम ईंसानियत का पक्षकार हैं

'लेन देन में ईमानदारी रखो'

83 वीं सूरए मुतफ्फेकीन में अल्लाह फरमाता है कि 'तबाही है घटाने वालों के लिए जो लोगों से लेते हैं तो नापकर पूरापूरा लेते हैं। और जब उन्हें नापकर या तौलकर देते हैं तो घटा कर देते है। क्या वे समझते नहीं कि उन्हें (मरकर दोबारा) जीवित उठना है। एक बड़े भारी दिन के लिए जिस दिन लोग सारे संसार के रब (पालनहार) के सामने खड़े होंगे।' इन आयतों में अल्लाह ने इंसान की एक बहुत बुरी आदत (गुनाह) का जिक्र किया है कि कुछ लोग जब किसी से कोई सौदा करते हैं और जब सामान लेते है। वो उसे पूरा अपनी कसौटी पर खरा चैक कर लेते है। पूरा-पूरा तोल कर लेते है। उसमें किसी किस्म का नुस्ख या कमीपेशी नहीं रहने देते। लेकिन इसके विपरीत जब वही सामान दुसरे को बेचते हैं तो उसमें मिलावट कर देते हैं। और डंडी मारते है। सौदे में धोखेबाजी करके किसी भी तरह उसका ज्यादा मुनाफा वसूल करना उद्देश्य होता है। और उनकी इस हरकत में या बेईमानी करते समय वे अपने रब को भूल जाते हैंकि हमारा रब हमें देख रहा ह। हमारे खोटे-खरे कर्मों की रिकार्डिंग करने के लिए उसने फरिश्ते तैनात कर रखें है। जो हमारी जरा-जरा सी हरकतों को (सी.सी.टी.वी. कैमरे की तरह) रिकार्ड कर रहे है। लेकिन हम उन्हें देख नहीं पाते। इसीलिए अल्लाह अगली आयत में फरमा रहा हैं कि क्या वे यह नहीं जानते कि उन्हें मरना है फिर दोबारा जिंदा होना है। और उस दिन (कयामत) में उसे उसकी सारी हरकतों से अवगत करा दिया जाएगा जो उसने माल की खरीद फरोख्त में बेईमानी करी होगी वो भी उसे पता चल जायेगी। वह दिन बड़ा भारी होगा। मो. सल. ने फरमाया कि वह दिन हमारी गिनती के हिसाब से पचास हजार वर्ष का होगा। और उस दिन लोग अपने-अपने कर्मों के मुताबिक मजे में सुकून में होगा और उनको जल्दी से हिसाब लेकर जन्नत में भेज दिया जायेगा। और कुछ लोग ऐसे होंगे जिनके आमाल (कर्म) बहुत खराब होंगे जिसकी वजह से वे लोग बहुत गर्मी व तकलीफ में होगे फिर उनका हिसाब लिया जायेगा और गुनाह ज्यादा होने की वजह से उन्हें जहन्नुम (नर्क) में डाल दिया जायेगा। इसलिए अल्लाह फरमा रहा हैं कि मैं ही तुम्हें पैदा करता हूं, और मैं ही सारे संसार और उसकी सारी मखलूक का पालने वाला उनकी जरूरत को पूरी करने वाला हूं, तुम्हारे पैदा करने से पहले मैंने तुम्हारा रिज्क (सुराक) और जरूरत की चीजें पैदा कर दी है। इसलिए तुम अपने नाप-तौल और करोबार में बेईमानी करके, धोखाधड़ी करके कामयाब होने का ख्याल छोड़ दो। क्योंकि तुम्हारे ऐसे बुरे काम तुम्हारी कामयाबी नहीं है बल्कि तुम्हारी पराजय है। तुम्हारी मुसीबत है। तुम सभी से अच्छा सुलूक करो व्यापार में ईमानदारी रखो। और अपने पैदा करने वाले पर भरोसा करो जिसने तुम्हें पैदा किया है। वही तुम्हारी जरूरते पूरी करेगा। कुरान में अल्लाह ने कई जगह हमें अपने व्यापार धंधे में सच्चाई ईमानदारी रखने का हुक्म दिया है। खासतौर पर तराजू के मामले में बराबर तोलने पर सख्ती से हुक्म दिया है। काश कि आज इंसान व्यापार व्यवहार में ईमानदारी को पूरी तरह अपना ले तो दुनिया की सारी समस्याएं दूर हो जाएगी। कम से कम अल्लाह मुसलमानों को तौफीक दे कि जिस कुरान को वे मानते हैं उस कुरान की भी मानने लग जाएं।

फिजियोथैरेपी द्वारा आसान है बढ़े हुए वजन को घटाना

डॉ. राम पंवार
जनवकालत

वजन कम करने की चाहत सभी की होती है। फिर चाहे वह डाइट फॉलो करके करे या फिर एक्सरसाइज करके। स्वास्थ्य के लिहाज से खानपान की गलत आदतों के कारण आजकल लोगों का वजन बढ़ना आम बात हो गई है। इस पर अंकुश लगाने के लिए वजन प्रबंधन का नजरिया अपनाना बेहद कारगर साबित होता है।

स्वस्थ जीवनशैली के लिए वजन प्रबंधन लंबे समय तक चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें पौष्टिक खान-पान और शारीरिक व्यायाम का संतुलन बना कर चला जाता है। इस प्रक्रिया के लिए यह जानना जरूरी है कि आपके शरीर को वास्तव में किस चीज की अवश्यकता है?

फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. राम पंवार का कहना है कि वजन प्रबंधन अधिक खान-पान और कम खान-पान, दोनों को नियंत्रित कर सकता है। जहां तक फिजियोथेरेपी का सवाल है, यह स्वास्थ्य से जुड़ी कई तरह की स्थितियों, संचलन से जुड़ी अनियमितताओं का आंकलन करता है और उनकी पहचान, इलाज तथा रोकथाम करता है। अब फिजियोथेरेपी वजन प्रबंधन भी करता है। नियमित रूप से फिजियोथेरेपी के जरिए वजन कम होना रोका जा सकता है। वजन से जुड़ी शारीरिक व मनोवैज्ञानिक जटिलताओं से निपटने में ये काफी कारगर साबित होते हैं और वजन प्रबंधन में अहम भूमिका निभाते हैं।

फिजियोथेरेपिस्ट्स का मानना है कि हाइड्रोथेरेपी के तरीकों से केवल आठ हफ्ते में वजन कम करने में मदद मिल सकती है, पर उनकी सलाह ये भी रहती है कि जब यह प्रक्रिया पूरी हो जाए, उसके बाद भी सुरक्षित व पौष्टिक खान-पान ही जारी रखना होगा. इस थेरेपी के जरिए रक्त संचरण का स्तर भी बेहतर कर सकते हैं। वजन कम करने के लिए जहां एक ओर

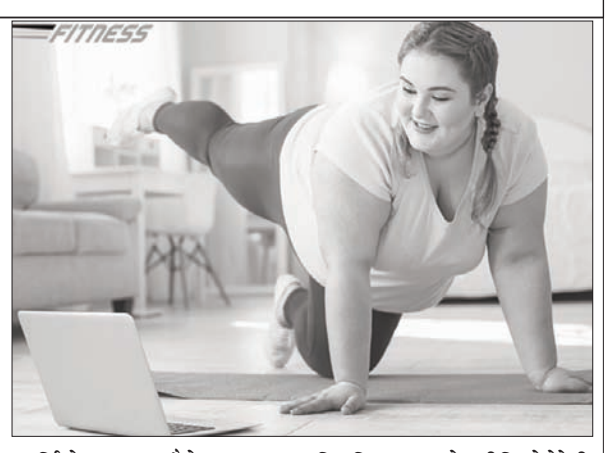

कार्डियोवस्कुलर जैसे व्यायाम, टहलना और साइकिल चलाना बहुत अच्छा होता है, खान-पान का भी उतना ही महत्व है. प्रोटीन, कम वसा वाले डेयरी उत्पाद, साबुत अनाज, फल और हरी पत्तीदार सब्जियां फिजियोथेरेपी के दौरान लेते रहना जरूरी है। डॉ. राम पंवार ने कहा जब भी कोई मेरे पास वजन से संबंधित परेशानी लेकर आता है, तो वह मुझसे तेजी से वजन घटाने के सुझाव मांगते हैं। ऐसे में मैं उन्हें कम से कम एक घंटे तक 'कार्डियो' व्यायाम करने की और साथ ही एक सप्ताह में तीन बार फीजियोथेरेपी सत्र में शामिल होने की सलाह देता हूं। अगर कोई अधिक वजन वाला व्यक्ति नियमित रूप से फीजियोथेरेपी को अपने जीवन में अपनाता है, तो वह अपना वजन आसानी से कम कर सकता है। उन्होंने कहा कि जब आप संपूर्ण तकनीक के साथ फिजियोथेरेपी एक्सरसाइज, पौष्टिक व संतुलित खान-पान करते हैं और अन्य बताई गई शारीरिक गतिविधियां करते हैं, तो आप आसानी से वजन कम कर सकते हैं।

MY PHYSIO
डॉ. राम पंवार
फिजियोथेरेपिस्ट एण्ड क्लीनिकल फिटनेस एक्सपर्ट
मो.- 9981200302

बांधों पर नजर रखी जाए, जलस्तर बढ़ता है तो तत्काल सूचित करते हुए एक्शन ली जाए, वर्षा के मद्देनजर अलर्ट रहने के निर्देश

रतलाम। (जनवकालत)। जिले में जारी लगातार वर्षा के मद्देनजर कलेक्टर श्री नरेंद्र सूर्यवंशी द्वारा संबंधित अधिकारियों की एक बैठक का कलेक्ट्रेट कक्ष में आयोजित की गई। कलेक्टर ने अधिकारियों को वर्षा के दृष्टिगत अलर्ट रहने के निर्देश दिए।

कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने निर्देशित किया कि जिले में बांधों पर नजर रखी जाए, उनमें पानी के जमाव की जानकारी सतत प्रदान की जाए। जलस्तर बढ़ता है तो तत्काल सूचित करते हुए एक्शन ली जाए। पुल-पुलिया पर नजर रखें, पुल-पुलिया पर वर्षा का पानी चढ़ने की स्थिति में कोई आवागमन नहीं हो वाहन, इत्यादि नहीं गुजरे। इसके लिए आवश्यक पुलिस बल की तैनाती तथा ड्रॉप गेट इत्यादि व्यवस्था की जाए। नगर निगम शहर में निचली बस्तियों में जलभराव की स्थिति पर नजर रखें। सभी एसडीएम को निर्देशित किया कि उनके क्षेत्र में पानी के बहाव, झरनों तथा अन्य जल संरचनाओं पर जोखिम की स्थिति में लोग नहीं पहुंचे यह सुनिश्चित करें। नदियों के जलस्तर में बढ़ोतरी पर निगाह रखी जाए।

बैठक में अपर कलेक्टर श्री एम.एल. आर्य, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री सुनील पाटीदार, एसडीएम श्री संजीव पांडे, निगम आयुक्त श्री अभिषेक गहलोत, जिला होमगार्ड कमांडेंट सुश्री रोशनी बिलवाल, तहसीलदार श्रीमती अनीता चोकोटिया, लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री श्री अनुरागसिंह, पीएचई तथा जल संसाधन विभाग के कार्यपालन यंत्री आदि अधिकारी उपस्थित थे।

होम्योपैथिक चिकित्सा व निवारण

नमस्ते, होम्योपैथिक चिकित्सा व निवारण में इस बार हम बात करेंगे 'ऐनाकार्डियम' के बारे में-

स्नायु दौर्बल्य से पीडित रोगियों के लिये यह लाभदायक है ।इसके रोगी को स्नाविक मंदाग्नि की समस्या रहती है ।भोजन करने के बाद राहत मिलती है। अवसाद चिडचिडापन तथा के साथ विद्यर्थियों में परीक्षा का भय बना रहता है। रोगी श्राप देने और शपथ लेने में देर नहीं करते है। मन में मिथ्याभय बना रहता है । सोचता है कि वह दो विचारों से भरा हुआ है । उसे लगता है कि कोई उसका पीछा कर रहा है । सहज में क्रोध आ जाने का स्वभाव होता है । बहुत दूर से दिवंगत आत्माओं की ध्वनि सुनाई देने की बात करता है। सिर मे चक्कर आना व डाट लगे जैसे होने की अनूभुति होती है। कपालशीर्ष का दर्द भोजन के बाद कम हो जाता है । खोपडी में छोटी छोटी फुंसिया हो जाती है। वस्तुए बहुत अधिक दूर दिखलाई देती है। लगातार छींके आती है। गंधज्ञान बदल जाता है। सर्दी जुकाम के साथ हृदय की धडकन बढ जाती है। आंखों के आसपास नीले छल्ले हो जाते है । मुख में दर्दनाक छाले दुर्गंध, जीभ सूजी हुई लगती है ।मुख से लार टपकती है। आमशय के अंदर खालीपन की अनुभूति होती है । पेट में ऐसा दर्द होता है जैसे डाट लगा दिया गया हो। मलांत्र में जैसे डाट लग गया हो । गुदा के संचोसन शक्ति में कमी हो जाने से मलत्याग अत्यधिक कठीन हो जाता है। मलद्वारा की होने वाली खुजली के लिये उपयोगी

डॉ. सोहनशिव चौहान
जनवकालत

दवा है। महिलाओं के प्रदर स्त्राव दुखन व खुजली व कम मात्रा में ऋतुस्त्राव होने पर यह दवा उपयोगी है।

खुली हवा में अच्छा लगता है। बातचीत करने से खांसी आ जाती है । बच्चों मे गुस्सा करने के बाद खांसी आती है। खाना खाने के बाद खांसी के साथ खाया हुआ भोजन उलट देता है व सिर में पिछे दर्द हो प्रारंभ हो जाता है। हृदय में बडी हुई धडकन के साथ दुर्बल स्मरण शक्ति तथा हृदयप्रदेश में सुई चुभने की अनूभूति। कंधों में मंद मंद दबाव, जैसे बोझा रखा हो। हाथ के अंगुठे में स्नायुशूल । पक्षाघाती दुर्बलता । घुटनों में जैसे पक्षाघात हो गया हा । तथा उनपर पट्टी बांध दी गई हो । पिंडलियों में मरोड । हथेलियों में मस्स्रे कई कई राते बीत जाने के बाद भी नींद नहीं आती है। त्वचा के की तेज खुजली । साथ ही चिडचिडापन फफोलेदार उद्भेद, सूजन, छपाकी सिरोन्चा विष जैसा उद्भेद।

इति श्री
डॉ. सोहनशिव चौहान
पता- 111 ग्लोबस टाउनशिप (पुरानी)
रतलाम।
मो.-9425104075

डिप्थीरिया एवं टिटनेस से बचाव के लिए टीकाकरण अभियान का शुभारंभ महापौर श्री पटेल ने किया

जनवकालत

रतलाम। जिले में 16 अगस्त से 31 अगस्त के मध्य डिप्थीरिया एवं टिटनेस से बचाव के लिए टीकाकरण अभियान का संचालन किया जा रहा है। टीकाकरण कार्यक्रम का शुभारंभ उत्कृष्ट विद्यालय के सभाकक्ष में महापौर श्री प्रहलाद पटेल, पार्षद श्रीमती अनीता कटारा, राज्य रेडक्रॉस समिति सदस्य श्री महेंद्र गादिया, जिला शिक्षा अधिकारी श्री के.सी. शर्मा, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. प्रभाकर ननावरे, प्राचार्य उत्कृष्ट विद्यालय श्री सुभाष कुमावत, जिला स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. जी.आर. गौड़, डीपीएम डॉ. अजहर अली आदि की उपस्थिति में किया गया। कार्यक्रम में महापौर श्री प्रहलाद पटेल ने विद्यार्थियों को स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के बारे में मार्गदर्शन दिया। उन्होंने सभी पात्र 5 वर्ष की आयु के बच्चों को डीपीटी, 10 वर्ष एवं 16 वर्ष की आयु के बच्चों को डीटी का टीका आवश्यक रूप से लगवाने की अपील की। श्री गादिया ने बच्चों को डिप्थीरिया से बचाव के लिए संकल्प दिलाया। डॉ. ननावरे में बताया कि जिले में लगभग 60 हजार बच्चों का वैक्सीनेशन स्कूलों में किया जाएगा। सभी बच्चों को डिप्थीरिया एवं टेटनस से बचाव के लिए वैक्सीनेशन किया जा रहा है।

कार्यक्रम के दौरान उत्कृष्ट विद्यालय की डॉ. पूर्णिमा शर्मा एवं डब्लूएचओ के सर्विलेंस अधिकारी डॉ. रितेश बजाज, श्री लोकेश वैष्णव, श्री निलेश चौहान आदि उपस्थित रहे। एएनएम श्रीमती लाडकुंवर, श्रीमती ज्योति सोलंकी, मीना शास्त्री, आशा मीरा सालवी आदि ने वैक्सीनेशन कार्य किया। संचालन श्री आशीष चौरसिया ने किया एवं आभार प्राचार्य श्री सुभाष कुमावत ने माना।

नियत समय पर हो जलप्रदाय-निगमायुक्त

रतलाम/ (जनवकालत)। जलप्रदाय नियत समय पर हो इस हेतु निगम आयुक्त श्री अभिषेक गेहलोत ने निगम के जलप्रदाय विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारियों की बैठक लेकर जलप्रदाय नियत समय पर किये जाने के निर्देश दिये। निगम आयुक्त श्री गेहलोत ने आयोजित बैठक में शहर में पेयजल टंकी व बूस्टींग से किये जाने वाले जलप्रदाय की जानकारी लेकर निर्देशित किया कि टंकियो को भरने व सप्लाय की डे-1 व डे-2 की जानकारी तैयार की जाये साथ ही टंकियों में फ्लो मीटर लगाया जाये। उन्होने निर्देशित किया कि पेयजल टंकियों व बूस्टींग से सभी क्षेत्रों में समय पर जलप्रदाय किये जाने हेतु क्षेत्रों में एक के बाद एक समय निर्धारित किया जाकर पेयजल वितरण किया जाये ताकि पुरे दबाव के साथ पेयजल विततरण हो सकें। आयोजित बैठक में कार्यपालन यंत्री श्री सुरेषचन्द्र व्यास, श्री सत्यप्रकाष आचार्य, सहायक यंत्री श्री ष्याम सोनी, उपयंत्री श्री सुहास पंडित, निज सहायक श्री सुभाश गोयल के अलावा सर्वश्री नीरज यादव, जितेन्द्र सिसोदिया, मोहनलाल ओसारी आदि उपस्थित थे।

स्वतंत्रता दिवस की वर्षगांठ पर फैंसी ड्रेस का आयोजन

जनवकालत

रतलाम। सिंधु सेना, श्री लाल साईं चलिहा समिति व श्री लाल साईं बहिराणा मंडली के संयुक्त तत्वाधान में श्री कालिका माता मंदिर परिसर स्थित श्री झूलेलाल मंदिर पर सिंधी समाज द्वारा 40 दिवसीय चालिहा महोत्सव के अन्तर्गत हर्षोल्लास पूर्वक धार्मिक आयोजन किए जा रहे है। जिसके तहत आजादी का 75 वां अमृत महोत्सव के अन्तर्गत स्वतंत्रता दिवस पर भगवान श्री झूलेलाल जी मंदिर कालिका माता परिसर में फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें सैकड़ों की संख्या में समाज के बच्चे भगवान शिव, भगवान श्रीगणेश, भारत माता, सैनिक, माता लक्ष्मी, जवाहरलाल नेहरू, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, हेमुकालानी एवं बच्ची हेमनानी परिवार द्वारा छोटे सांई मनीषलाल सांई जी की वेशभूषा धारण कर प्रस्तुतीं दी, साथ ही 251 दीपों की रंगोली भी बनाई गई । जिसमें 75 अंक एवं स्वास्तिक का चिन्ह बनाया गया। सिंधु सेना नगर अध्यक्ष रमेश चोथयानी ने बताया कि इस मौके पर कुं. हंशिका भाटिया को सिगिंग के आयोजन में राष्ट्रीय स्पर्धा में प्रथम स्थान प्राप्त होने

पर चालीहा समिति द्वारा सम्मान किया गया।

15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर मंदिर में तिरंगा रोशनी एवं तिंरगा बलून डेकोरेशन भी किया गया। मंदिर का भव्य श्रृंगार सौरभ मोदी, मनोहर पुजारी द्वारा किया गया। भव्य बहराणा साहेब, भोजराज मुलचंदानी एवं शिवकृपा गारमेन्ट के द्वारा कराया गया एवं प्रसादी वितरण भी इन्ही के द्वारा की गई।

महिला स्वसहायता समूहों को 3 करोड 7 लाख रु. का ऋण वितरण

रतलाम। (जनवकालत)। राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों की निर्धन महिलाओं के लगभग 4800 स्वयं सहायता समूहों को जोडकर आत्मनिर्भर बनाए जाने का कार्य किया जा रहा है। 12 अगस्त को समूहों को ऋण वितरण शिविर का आयोजन कलेक्टर श्री नरेन्द्र सूर्यवंशी की अध्यक्षता में किया गया। जिले 142 महिला स्वयं सहायता समूहों को 3 करोड 7 लाख रुपए का ऋण वितरण किया गया। समूह की महिलाओं द्वारा कार्यक्रम का सीधा प्रसारण दूरदर्शन सहित क्षेत्रीय चेनल एवं सोश्यल मीडिया के माध्यम से देखा व सुना गया। शिविर में एचडीएफसी बैंक के शाखा प्रबंधक श्री जितेश चौहान को वर्ष 2021-22 में समूहों को सर्वाधिक ऋण वितरण करने हेतु प्रशस्ति पत्र प्रदान किया

गया। कार्यक्रम में जिला पंचायत की अतिरिक्त मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रीमती विनीता लोढा, जिला परियोजना प्रबंधक श्री हिमांशु शुक्ल तथा मिशनकर्मी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने 12 अगस्त को स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं से संवाद किया। मुख्यमंत्री निवास पर दोपहर 2.30 बजे आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न जिलों की लगभग 300 समूह सदस्य बहनें पहुंची। जिले के पिपपौदा, आलोट, बाजना, रावटी, बासिन्द्रा तथा जावरा में छोटे-छोटे शिविर आयोजित किए गए।

Actual size Page 8 back page_master.qxd 8/17/2022 11:49 PM Page 1

राष्ट्रीय साप्ताहिक
जन वकालत

गुरुवार दिनांक 18 अगस्त से 24 अगस्त 2022

संस्मरण...

मैं प्राचार्य बना...

- डॉ. जयकुमार जलज

गतांग से आगे... एक बार छात्रों का एक जुलूस नारे लगाता हुआ आया मुझसे किसी ट्रान्सफर को रद्द करने का अनुरोध किया। मुझे यह समझने में देर नहीं लगी कि ये मेरे महाविद्यालय के छात्र नहीं हैं। मेरे छात्र इस तरह नारे लगाते हुए नहीं आते थे। वे आते। मिलते। उनका काम करने लायक होता, हो जाता नहीं करने लायक होता, नहीं होता लेकिन वे समझते और संतुष्ट होकर लौटते।

जुलूस के छात्रों से मैंने कहा, जिस काम का आप कह रहे हैं वह शासन स्तर का है आप माँग पत्र ले आइए। मैं अग्रेषित कर दूंगा। वे माँगपत्र लाए थे। वह आवश्यक अधिक प्रतियों में भी था तैयारी पूरी थी। पर माँग पत्र पर किसी के हस्ताक्षर नहीं थे। मैंने कहा, सरकार इस पर ध्यान ही नहीं देगी। इसके एक खाने में अपना नाम, एक में कक्षा लिखिए। फिर उसके सामने हस्ताक्षर करिए। यह सुनते ही उनका नेता बोला, चलो रे चलो। कोई यह कर मत देना दरअसल वे एक अन्य शिक्षा संस्था के प्रायोजित छात्र थे। जब भी मेरे साथ कोई छल हुआ मैंने खुद को उससे बचाया तो पर छलकर्ता को कभी यह अहसास नहीं होने दिया कि मैंने उसके छल को पकड़ लिया है। फिर ये तो बेचारे एक हायर सेकेण्डरी स्कूल के ग्यारहवीं-बारहवीं कक्षा के बच्चे थे !

छात्रों की समस्याएँ सुलझाने में, उनकी सुनने में मुझे आनन्द आता। कभी कभी मैं उनसे ही उस समस्या का हल पूछता जिसे लेकर वे उत्तेजित और आन्दोलनरत होते। महाविद्यालय में लाल बहादुर शास्त्री की एक मूर्ति कला एवं विज्ञान भवन के बीच खुले में लगी हुई थी। वह अवकाश का दिन था। किसी ने फोन करके बताया कि मूर्ति खण्डित होकर नीचे गिरी पड़ी है। मैं तुरन्त पहुँचा। मूर्ति का हर टुकड़ा सावधानी से एकत्र करवाया और सुरक्षित कक्ष में रखवा कर घर लौटा। आशंका तो थी ही अगले दिन छात्र आन्दोलित हो उठे। मैंने धार फोन लगाया। वहीं की बनी हुई थी मूर्ति राशि बहुत अधिक बताई गई। मैं चाहता था शासन अनुमति दे दे तो मैं किसी अन्य मद से रुपए स्वीकृत करके नई मूर्ति बनवा लूँ। अनुमति नहीं मिली। उन्हीं दिनों दूरदर्शन पर शुक्रवार को शास्त्रीजी पर एक धारावाहिक आता था। छात्र शुक्रवार को धारावाहिक देखते और शनिवार को आन्दोलन करते। कुछ लोग मूर्ति के टूटने में कुछ अन्य अर्थ तलाशने की कोशिश में थे। मैंने छात्रों को उनसे सावधान रहने के लिए कहा तो वे बोले, हम लोग सब समझते हैं, सर आप चिन्ता न करें। अब मैंने उनसे ही हल पूछा। दरअसल मूर्ति लोहे की पतली रॉड पर बिठाई गई थी। किन्हीं बच्चों ने पतंग लूटते समय उसे गिराया। उनकी लूटी हुई डोर का हिस्सा भी स्टैण्ड पर लटका हुआ मिला। आन्दोलनकारी छात्रों के दिमाग में यह घटनाक्रम स्पष्ट था। उन्हीं छात्रों में से कुछ ने बताया कि बाजना बस स्टेण्ड पर एक मूर्तिकार आया हुआ है। मैंने ऑटो भेजकर मूर्तिकार को बुलवाया। खण्डित मूर्ति दिखाई। उसने कहा, यह बिलकुल पहले जैसी हो जाएगी। मैंने पूछा, कितना खर्च आएगा ? बोला, दो सौ रुपए लगेंगे। मैंने मुस्कराते हुए पूछा लेजाने लाने का व्यय भी आपका ? बोला, नहीं वह आपको अलग से देना होगा। पाँच दिन बाद मूर्ति आई। उसे काँच के केस में वाचनालय के ऊपर जहाँ मूर्ति नीचे से दिखाई दे, प्रतिष्ठित किया गया। पुष्प अर्पित हुए मिठाई वितरित हुई, वाचनालय का नाम लाल बहादुर शास्त्री वाचनालय रख दिया गया। मूर्तिकार को सम्मान की अतिरिक्त राशि दे कर ऑटो से ही विदा किया।

बड़े लोग अपनी समस्याएं खुद पैदा करते हैं। उनसे निबटने में न आनन्द आता है, न संतोष और न सुखानुभूति। केवल सफलता भर मिलती है। एक प्रोफेसर का स्थानान्तर हुआ। उन पर महाविद्यालय का अग्रिम बकाया था। वे जाना चाहते थे। मैं भी उन्हें जाने देना चाहता था। जाने दिए गए। अग्रिम वसूली के लिए एल.पी.सी. का हथियार महाविद्यालय के हाथ में होता है। उनका एल.पी.सी. रोक लिया गया। समय बीतता गया। एल.पी.सी. रुका रहा। वे जानते थे कि अग्रिम चुकाए बगैर एल.पी.सी. जारी नहीं होगा।

एक दिन उनके बड़े भाई जो एक अन्य विषय में प्रोफेसर थे, आए बताया, भाई का एक्सीडेंट हो गया है। अस्पताल में हैं। एल.पी.सी. के बिना तनख्वाह बंद है। एल.पी.सी. जारी कर दीजिए। तनख्वाह मिलने से उनका इलाज भी हो सकेगा और महाविद्यालय का अग्रिम भी चुका दिया जाएगा। उन्होंने गारण्टी ली कि अगर एक माह में अग्रिम नहीं चुकाया गया तो वे चुकाएंगे।

मैंने सोचा, स्थानान्तर पर गए प्रोफेसर को कुछ हो गया तो लोग आलोचना करने से नहीं चूकेंगे। मैं भी शायद अपने आपको कोसूं। मैंने कहा, लिखकर दीजिए कि अग्रिम राशि एक माह में चुका दी जाएगी। उन्होंने लिखकर दे दिया। सोचा होगा, पढ़ेंगे थोड़े ही खानापूर्ति कर रहे हैं। मैंने कहा, आपने एक की जगह दो माह का लिख दिया। वे है हैं करते हुए बोले, ठीक कर देता हूँ। गलती हो गई। मैंने कहा, नहीं। कोई बात नहीं। आप दो माह में चुका दीजिएगा।

मैंने एल.पी.सी. जारी कर दी। फिर जो होना था वही हुआ। दो महीने बीतने पर भी राशि नहीं चुकाई गई। बड़े भाई कन्नी काटते रहे। छोटे भाई तो मेरे महाविद्यालय से जा ही चुके थे। उन्हें तो एल.पी.सी. पहुँच जाने के बाद से तनख्वाह मिल ही रही थी। उधारी वसूल किए बिना एल.पी.सी. जारी करना प्राचार्य की भूल थी। मैंने तय कर लिया था कि राशि मैं अपनी जेब से जमा करके एजी और शासन की प्राचार्य के विरुद्ध होने वाली कार्यवाही से बचूँगा। इसलिए उन्हें खुलकर खेलने का मौका देता चला गया। संयोग से संबंधित प्रोफेसर फिर स्थानान्तरित होकर इसी महाविद्यालय में आए। फिर भी अग्रिम नहीं चुकाया तो मैंने उनका वेतन रोकने का फैसला किया। लेकिन उनकी बैठक एक ऐसी जगह थी जहाँ से जनमत प्रभावित होता रहता था। सोचा वेतन रुकने का आदेश वहाँ दिखाकर वे सहानुभूति बटोरेंगे। लोग कहेंगे कैसे प्राचार्य हैं ? अधीनस्थों के पेट पर लात मारते हैं ? इसलिए एक ही आदेश में मैंने उनका और प्राचार्य दोनों का वेतन रोक दिया। प्राचार्य का इसलिए कि इतनी लम्बी अवधि में भी अग्रिम की वसूली नहीं कर सके। अब संबंधित प्रोफेसर कहीं भी यह आदेश दिखाने की स्थिति में नहीं रहे। हारकर उन्होंने लेखाशाखा में अग्रिम जमा करा दिया। जिस पसोपेश में महाविद्यालय को रहना पड़ा उसके लिए न उन्होंने, न भाई ने खेद प्रकट किया।

(क्रमशः)

30, इंदिरा नगर, रतलाम

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच ने मनाया आजादी का अमृत महोत्सव ध्वजारोहण कर, मादरे वतन हिंदुस्तान जिंदाबाद के लगाए नारे

जनवकालत/ रतलाम

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के अखिल भारतीय मार्गदर्शक इंद्रेश कुमार के आह्वान पर मंच के प्रदेश संयोजक फारुख खान के निर्देशानुसार देश भर में चल रहे आजादी के 75 वे अमृत महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 13 से 15 अगस्त तक विभिन्न कार्यक्रम मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की रतलाम जिला इकाई में आयोजित किए गए।

मदरसे में हर घर तिरंगा अभियान मनाया गया -

जिसके अंतर्गत आयशा सिद्दीकी मदरसे में हर घर तिरंगा अभियान मनाया गया, कार्यक्रम में बच्चियों ने तिरंगा लहराते हुए अपने देश की तरक्की एवं आपसी भाईचारे के लिए दुआ भी की।

स्मरण रहे अभी कुछ ही दिन पहले कॉमनवेल्थ खेलों की स्पर्धा में भारत की मुस्लिम समाज की बेटी निखत जरीन ने स्वर्ण पदक हासिल कर अपने देश का सम्मान पूरे विश्व में बढ़ाया है इसी तरह आगे भी हमें अपने देश के सम्मान एवं रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए।

वृद्धाश्रम में वितरित किए तिरंगे -

इसी तारतम्य में स्थानीय विरियाखेड़ी स्थित वृद्धाश्रम में वृद्ध माताओं और बुजुर्गों को तिरंगा और मिठाई वितरित कर आजादी का अमृत महोत्सव मनाया गया।

ध्वजारोहण कर मनाया स्वतंत्रता दिवस -

आजादी के 75 वे अमृत महोत्सव के समापन दिवस 15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस पर शहीद चौक सराय और नयापुरा पर ध्वजारोहण कर राष्ट्रीय गान गाया, साथ ही मादरे वतन हिंदुस्तान जिंदाबाद के नारे लगाकर मिठाई वितरित कर स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी गई।

कार्यक्रम के आयोजक मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के रतलाम जिला संयोजक इलियास अहमद कुरैशी रहे। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी के जिला उपाध्यक्ष प्रदीप जी चौधरी, मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के राष्ट्रीय परिषद सदस्य सैयद अमजद अली, मंच के वरिष्ठ नेता शाहिद कुरेशी, भाजपा नेता सोमेश पालीवाल, समाजसेवी युनुस ताज रहे।

इस अवसर पर पुर्व पार्षद सईद कुरैशी, सलीम मेव, हमीद खान, रफिक कुरैशी, शाहिद अंसारी, जिला मीडिया प्रवक्ता शैख अजहरउद्दीन, नासिर शाह,रशीद आलम, वजीर शैख, फैयाज खान, ईसूफ मेव, सोनू चौहान, लतीफ बा शाकब, महेश सोलंकी, एहसान रहमानी, सलीम जयपुरी, अकबर कुरेशी, गुरुमुख शर्मा, इमरानूउदीन, शाकिर भाई कप्पू कुरैशी, फिरोज खान सलामत शाह, अब्दुल लतीफ बख्शीया, अमन कुरैशी आदि बड़ी संख्या मे पदाधिकारी व कार्यकर्ता उपस्थित रहे। उक्त जानकारी मीडीया प्रवक्ता शैख अजहरुद्दीन ने दी।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक, संम्पादक- 'राजेश झाला ए. रज़ाक' द्वारा पंकज प्रिंटर्स एंड पैकेजिंग LUN-22, सेक्टर F, सांवेर रोड इंदौर से मुद्रित, 21, ए. जवाहर नगर , मेन रोड़, श्री सॉवलिया फ्लोअर मिल के पास, रतलाम (म.प्र.) से प्रकाशित। RNI NO.- MPHIN/2012/49631 फोन न.- 09907008480, 07828794341, 07412-407442 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार। किसी भी प्रकार के विवादो का न्यायकार्य क्षेत्र रतलाम रहेगा। RTM/DN/MP/200/19-21